प्रकाशित पुस्तकें

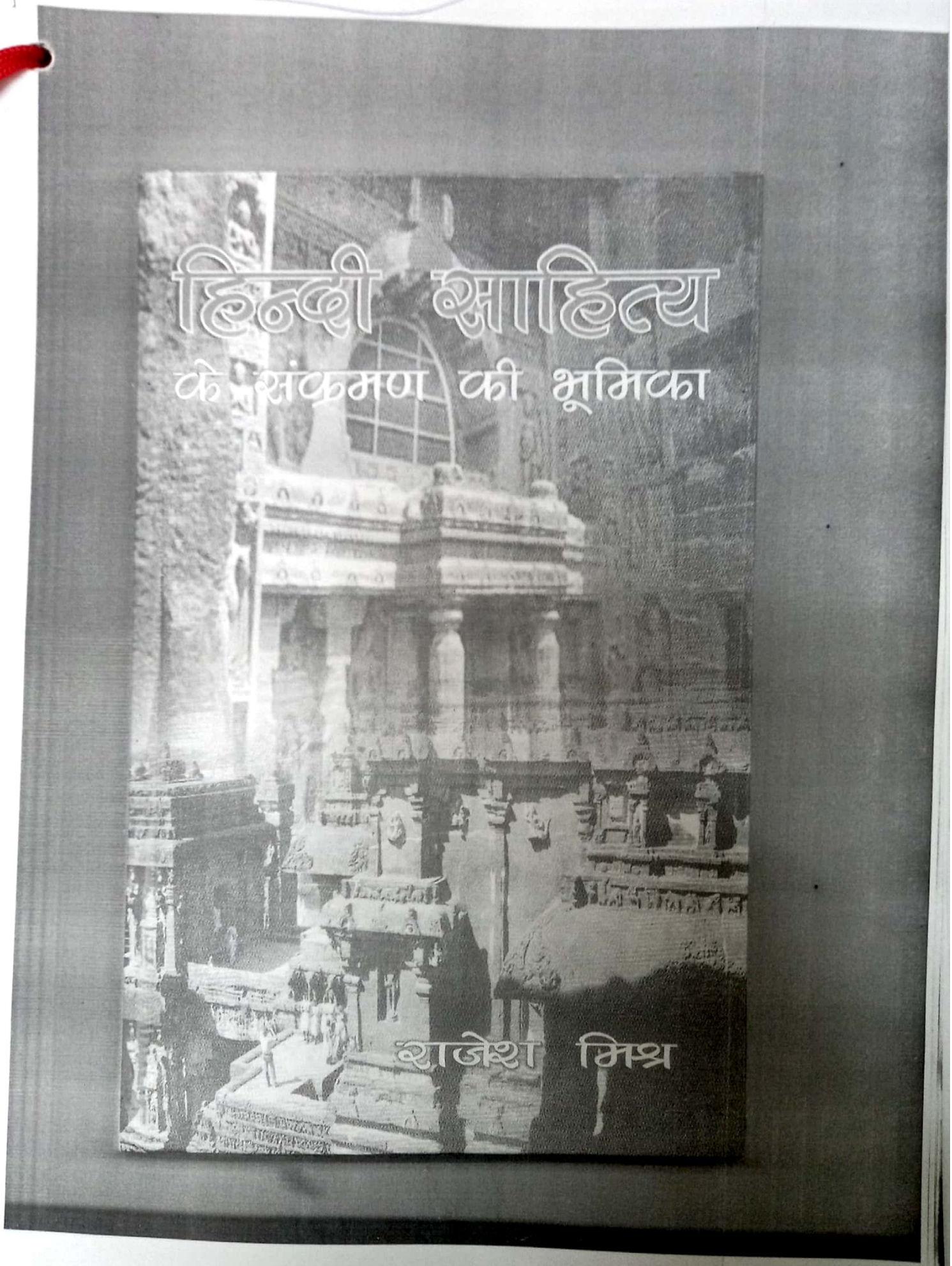

Scanned with CamScanner

हिन्दी साहित्य के संक्रमण की भूमिका

राजेश मिश्र

प्रकाशक
पिलग्रिम्स पब्लिशिंग

पिलग्रिम्स बुक हाउस
बी.27/98, ए-8, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी-221010
टेलीफोन–(91-542) 2314060
फैक्स– (91-542) 2312456
e-mail-pilgrims@satyam.net.in
website-www.pilgrimsbooks.com

प्रथम संस्करण–2009 ई0
कॉपीराइट © सनू 2009, राजेश मिश्र

ISBN: 978-81-7769-871-8

आवरण– आशा मिश्रा
लेआउट– अर्चना मिश्रा

इस पुस्तक का पुनर्प्रकाशन, किसी भी प्रकार का आंशिक या पूर्ण प्रकाशन, इलेक्ट्रानिक प्रयोग, छायाचित्र का उपयोग आदि, विशेषज्ञ की समीक्षा के अलावा, प्रकाशक की अनुमति के बिना कानून का उल्लंघन है।

मुद्रक–पिलग्रिम प्रेस प्रा. लि., शालपुर, वाराणसी

अनुक्रम

पृ. सं.

शुभाशंसा vii

पूर्व पीठिका ix-xiii

१. आदिकालीन संक्रमण बोध १-४५

क. अपभ्रंश खण्ड– जैन साहित्य, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य

ख. देशभाषा साहित्य– राजस्थानी साहित्य, रासक या रासो काव्य, फागुकाव्य, चरिउ काव्य, पावड़ा काव्य, षड्ऋतु और बारहमासा, उपलब्धियाँ (भाषारूप और जनजुड़ाव), कथ्य और शिल्प

ग. अवहट्ट खण्ड– दक्खिनी हिन्दी (खड़ी बोली) का प्रारम्भिक रूप, दक्खिनी हिन्दी के सूफी साहित्य

२. भक्तिकालीन साहित्य का संक्रमण बोध ४६-८४

बौद्ध मत, अवतारवाद, पञ्चरात्र, शाक्त मत, शक्ति साधना, जैन मत, शैव मत, पाशुपत मत, वीर शैवमत या लिंगायत मत, कश्मीर शैव मत, सन्त मत

३. रीतिकालीन संक्रमण बोध ८५-१२५

क. रीतिकाव्य में पारम्परिक शास्त्रीयता का समाहार– छन्द शास्त्र, धर्म शास्त्र, दर्शन शास्त्र, काम शास्त्र

ख. रीतिकालीन गद्य साहित्य– राजस्थानी गद्य रूप, ब्रजभाषा गद्य रूप, खड़ी बोली हिन्दी गद्य रूप

ग. रीति शास्त्र और काव्य रचना

घ. रीतिकालीन भक्ति काव्य

ङ. रीतिकालीन वीर काव्य

च. नीति, ज्ञानकोष एवं हास्य काव्य

छ. रीतिस्वच्छन्द शृंगारी काव्य

४. आधुनिक काल में साहित्य का संक्रमण १२६-१६६

नाटक, उपन्यास, काव्य, हिन्दी साहित्य का ज्ञान-काण्ड

Scanned with CamScanner